फ्रांस में दबाव समूह – पंचम गणतन्त्र के पूर्व फ्रांस के दबाव समूह शासन पर पूर्ण दबाव नहीं डाल पाते थे। पंचम गणतन्त्र में शक्तिशाली कार्यपालिका की स्थापना की गयी है इसके कारण दबाव समूहों की कार्यशैली में परिवर्तन हुआ है। अब दबाव समूह परिस्थितिजन्य होकर विशेषज्ञ और पेशेवर कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित होने लगे हैं।

(1) व्यापारिक संगठन – वृहत व्यावसायिक संगठन, कन्फेडरेशन नेशनल डि पैट्रोनेट फ्रांकाइस (C.N.P.F) यह शासन पर विशेष दबाव डालते हैं।

(2) कृषि संगठन – फेडरेशन नेशनल सिंडिकेट डू एग्रीकोलाय रेशन एग्रीकोलस (F.N.S.E.A) यह सबसे प्रभावशाली कृषि संगठन है।

(3) श्रमिक संगठन – Confederation General du Travail, कैथोलिक कन्फेडरेशन फ्रैंकाइस डेस ट्रेवेलियर्स क्रेटीन्स (C.F.T.C) इत्यादि।

इसके अतिरिक्त पारिवारिक समूह, समाज कल्याणकारी समूह भी हैं।

भूमिका – दबाव समूह कानून निर्माण प्रक्रिया तथा कानूनों के क्रियान्वयन के लिए ये विधायिका तथा कार्यपालिका पर दबाव डालते हैं।

स्विट्जरलैण्ड में दबाव समूह — यहाँ पर ये समूह ज्यादा सक्रिय हैं क्योंकि अधिलेख का होना तथा प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र की प्रक्रिया के कारण यह ज्यादा प्रभाव डालते हैं।

1. स्विस व्यापार एवं उद्योग संघ,
2. स्विस कृषक संघ,
3. स्विस श्रमिकों का संघ,
4. कला एवं दस्तकारी संघ इत्यादि।

स्विट्जरलैण्ड में इन समूहों को सरकारी मान्यता प्रदान की गयी है इनका संघीय सभा में प्रतिनिधित्व होता है तथा संघीय पार्षद को परामर्श देते हैं।

रूसी संघ में दबाव समूह — नवीन रूसी संघ का निर्माण भी विभिन्न दबावों पर हुआ है। साम्यवादी व्यवस्था में दबाव समूह स्वतन्त्र होकर कार्य नहीं कर पाते थे। परन्तु वर्तमान में विभिन्न दबाव समूहों का विकास हुआ है जिनमें व्यापारिक समूह, कृषक समूह, श्रमिक समूह, सार्वजनिक विकास समूह तथा मानवतावादी समूह प्रमुख हैं। यद्यपि ये अमेरिका की भाँति अभी पूरी तरह से सक्रिय नहीं हैं परन्तु ये जनता व्यापक के सहयोग से कानून निर्माण तथा क्रियान्वयन में दबाव डालने का प्रयास करते हैं।